Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 8 | AUGUST 2022

महाकवि प्रो. सुधीकान्त भारद्वाज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. बलवन्त सिंह चौहान [1] | संगीता कुमारी सैनी [2]

[1] एसोसिएट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक (संस्कृत), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीमङ्गानगर (राज.)

[2] शोधच्छात्रा (संस्कृत), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगङ्गानगर (राज.)

ABSTRACT:

संस्कृत साहित्य की महाकाव्य परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं समृद्ध रही है। आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण से प्रारम्भ होकर यह अद्यावधि सतत् गतिमान है और आधुनिक महाकाव्यों की सुदीर्घ श्रृङ्खला इसका परिणाम है। आधुनिक काव्य परम्परा में अनेक कवियों द्वारा विविध विषयों को आधार मानकर काव्यरचना निर्बाध गति से की जा रही है। वर्तमानकाल में विभिन्न घटनाओं एवं परिदृश्यों के आधार पर कवि काव्यरचना में संलग्न हैं। ऐसे सरस्वती पुत्रों में श्रीराधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ. रमाकान्त शुक्ल, आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल, आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी, डॉ. हरिनारायण दीक्षित, डॉ. सत्यव्रत शास्त्री आदि विभिन्न स्वनामधन्य कवियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा आधुनिक संस्कृत साहित्य को अपनी रचनाओं से पल्लवित व पोषित करते हुए आधुनिक शोधवेत्ताओं के लिए नूतन मार्ग प्रशस्त किये जा रहे हैं। आधुनिक संस्कृत साहित्य के विकास में इन महनीय काव्यकारों की भूमिका स्तुत्य है। ऐसे ही महान कवियों में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर महाकवि डॉ. सुधीकान्त भारद्वाज का स्थान भी अग्रगण्य माना जाता है।

KEYWORDS:

ऋचीक, सान्निध्य, विरहस्तुति, सर्वांग, लोकोपकारी, विद्यावारिधि, परशुराम, सङ्कलन, आध्यात्मिक।

डॉ. सुधीकान्त भारद्वाज का व्यक्तित्व-

संस्कृत वाङ्मय में आधुनिक कवियों की महानतम श्रृंखला में डॉ. सुधीकान्त भारद्वाज 'कल्प' अपनी एक अलग ही पहचान रखते हैं। इनके द्वारा भगवान् विष्णु के अवतार परशुराम की पुण्यजन्म कथा को आधार बनाकर काव्यरूपी रत्न 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' की रचना कर वर्तमान युग के अनुसंधाताओं एवं काव्यरसिकों को अनुपम उपहार दिया है। इसी के साथ-साथ कवि द्वारा संस्कृत काव्य की अन्य प्रचलित विधाओं में भी प्रभूत मात्रा में लोकोपकारी साहित्य सृजन किया गया है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य के विद्वान् श्रद्धेय भारद्वाज आधुनिक विचारों से ओत-प्रोत हैं एवं संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार को समर्पित होने के साथ-साथ आध्यात्मिक भावों से भी युक्त हैं। ये सादा जीवन जीते हैं और इनका व्यक्तित्व सौम्य है। ये समय के प्रति प्रतिबद्ध हैं एवं इनकी सज्जनता और भाव पद-पद पर परिलक्षित होते हैं। कविवर बहुविधाओं में पारंगत, प्रतिभाशाली, धर्मपरायण, आध्यात्मिक वृत्तियों से सम्पन्न हैं और यही सब वृत्तियाँ कविवर को साहित्य की रचना हेतु प्रेरित करती हैं। कविवर श्रीमद्भागवतकथा के भी कुशल पण्डित हैं।

कविवर का जन्म हरियाणा राज्य के वर्तमान पलवल जिले के भेंडोली ग्राम में 03 अप्रेल 1945 को कृषक ब्राह्मण परिवार में हुआ। कवि के पिता श्री गोवर्धन भारद्वाज संस्कृत भाषा - कर्मकाण्ड आदि के मूर्धन्य विद्वान थे। मुष्किल माता श्रीमती सुखदेवी धार्मिक वृत्तान्तियों से युक्त थी। वे परमात्मा में विश्वास कहानी थी और विदुषी थी। पिता की असामयिक मृत्यु के कारण विचित्र माता हमेशा के लिए अपनी संतान की शिक्षा के प्रति तत्पर रही। कवि ने 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' के किरदार में अपना परिचय देते हुए कहा है -

भरद्वाजमुनेरवशे लब्धजन्मा सुयोगतः।

गोवर्धनाशन्जात्श्च सुखदेव्यं सुपुण्यतः।।[1]

बाल्काल से ही माता ने अपने पुत्र को धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों से परिपूर्ण रखा है। माता का पूर्ण प्रभाव कविवर के जीवन में परिलक्षित होता है। इसी कारण कवि ने 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' को अपनी पूज्य माता के श्रीचरणों में समर्पित किया है।

देवी या 'सुखदेई' नाम सरिता पीयूषवाहा सदा

सिक्त्वा भूमिजनान् विभिन्नमिष्टो मां मातृबन्धात् तथा।

शुद्धात्माद्या हि सकलान लोकान् रसैः सिञ्चति तस्यै

काव्यमिदं प्रत्युष्टमनसा पूजार्थमेवरपये।।[2]

(I) जीवन परिचय एवं शिक्षा - कविवर के जन्मस्थान भेंडोली' ग्राम में उस समय कोई 'विद्यालय नहीं था। अतः इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भेंडोली ग्राम से 2 किमी. दूर रामगढ़ ग्राम में सम्पन्न हुई। इन्होंने हसनपुर के महात्मा गाँधी सनातन धर्म महाविद्यालय से सन् 1960 में माध्यमिक कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की और सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल (हरियाणा) से सन् 1964 में संस्कृत व गणित विषयों के साथ प्रथम श्रेणी में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त इन्होंने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण कर नई दिल्ली के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सन् 1964 में लिपिक के पद पर नियुक्ति पाई। तदनंतर विभागीय परीक्षा उत्तीर्ण करने से ये 'रोजगार समाचार पत्रिका' में उप-सम्पादक के पद पर नियुक्त हुए।

राजकीय सेवा में पदस्थापित होने के बाद भी कवि का अध्ययन अनवरत चलता रहा और सन् 1968 में कवियर ने दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एक इवनिंग कॉलेज से संस्कृत विषय में प्रथम श्रेणी से एम.ए. (आचार्य) की परीक्षा उत्तीर्ण की दिल्ली विश्वविद्यालय से विद्यावारिधि उपाधि (पीएच.डी.) सन् 1976 में प्रो. श्री सत्यपाल नारंग के निर्देशन में प्राप्त की। पीएचडी उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त कविवर ने सन् 1977 में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से व्याकरणाचार्य तथा सन् 1984 में श्रीलालबहादुरशास्त्री विद्यापीठ दिल्ली से ज्योतिषाचार्य विषय में प्रथम श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की।

सन् 1976 में इन्होंने 'रोजगार समाचार' कार्यालय के उप-सम्पादक पद से त्यागपत्र दे दिया और हरियाणा प्रान्त में जींद जिले के सफीदो आदर्श महाविद्यालय में संस्कृत प्राध्यापक के पद को सुशोभित किया तत्पश्चात् सन् 1978 में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में संस्कृत विभाग के प्राध्यापक के पद पर कविवर की नियुक्ति हुई एवं सन् 1986 में इसी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में 'रीडर पद पर पदोन्नति प्राप्त हुई।

सन् 1992 में कविवर संस्कृत विभाग के आचार्य (प्रोफेसर) पद पर नियुक्त हुए और 9 वर्षों तक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर भी आप सुशोभित रहे। सन् 2005 में कविवर इसी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में कविवर 'भारद्वाज ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान, नई दिल्ली के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।

(II) गुरु परम्परा - महाकवि भारद्वाज की गुरु परम्परा में सनातन धर्म महाविद्यालय, हसनपुर के शिक्षक श्री मूलीराम जी शास्त्री का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कवि भारद्वाज अपने गुरु शास्त्री मूलीराम जी की प्रेरणा से ही संस्कृत भाषा के प्रति आकर्षित हुए। यथा-

सत्क्षेत्रजोऽपि निर्बुद्धिर्मूलीरामप्रसादतः ।

ज्ञये लोके सुधीकंतो वन्देऽहं तं गुरु परम।।[3]

नई दिल्ली में रोजगार कार्यालय में उप सम्पादक के पद पर रहते हुए आपने दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग से प्रो. सत्यव्रत शास्त्री के सान्निध्य में एवं प्रो. सत्यपाल नारंग के निर्देशन में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस अवधि में आपको दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. वाचस्पति उपाध्याय, डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार, डॉ. अवनिन्द्र कुमार जैसे महनीय गुरुजनों का सानिध्य प्राप्त हुआ ।

(III) विविध सम्मान एवं पुरस्कार - बहुमुखी प्रतिभा के धनी कविवर प्रो. सुधीकान्त भारद्वाज को अपनी काव्यरचना एवं विभिन्न ग्रन्थों के प्रणयन के सम्मान स्वरूप विविध मंचों पर अनेक बार बहुमानित होने का अवसर भी प्राप्त हुआ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा संस्कृत अकादमी आदि अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं ने आपको पुरस्कृत कर न केवल आपका अपितु सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का गौरव बढ़ाया है। आपको प्राप्त विशिष्ट सम्मानों की संक्षिप्त सूची इस प्रकार है **1.** 'वयं के स्मः' (नाट्यसंकलन) के लिए सन् 1984 में हरियाणा संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत। **2.** हरियाणा संस्कृत अकादमी द्वारा सन् 2003 में महर्षि वेदव्यास पुरस्कार प्रदान किया गया। **3.** हरियाणा संस्कृत अकादमी द्वारा सन् 2004 में महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार प्रदान किया गया। **4.** हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा सन् 2010 में आपको महामहोपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से परिपूर्ण व्यक्तित्व कविवर प्रो. भारद्वाज अद्यावधि प्राचीन ऋषि परम्परा का अनुसरण करते हुए अपना जीवन जी रहे हैं। विद्याभ्यास में निरत रहते हुए कवि का सम्पूर्ण जीवन तपोमय दिखाई देता है। अपने जीवन को आठवें दशक की पूर्णता की ओर अग्रसर कवि आज भी संस्कृत के विभिन्न कार्यक्रमों में उपस्थित रहकर संस्कृत काव्यरचना से सम्पूर्ण काव्यजगत् के लिए प्रेरणा बने हुए हैं।

प्रो. भारद्वाज की कृतित्व -

साहित्य, धर्म, ज्योतिष आदि विविध विधाओं में सिद्धहस्त कविवर प्रो. सुधीकांत भारद्वाज ने अपनी वैज्ञानिक यात्रा में अनेक ग्रंथो का प्रणयन किया है। कवि ने काव्य, खण्डकाव्य, नाटक आदि साहित्य की प्रियता: सभी धाराओं में अपनी कृतियों को पवित्र किया है। कवि द्वारा लिखित एवं प्रकाशित साहित्य को (अ) शोध संबंधित, (ए) उत्तेजित साहित्य (संस्कृत), (इ) उत्तेजित साहित्य (हिन्दी), (ई) पुस्तकालय एवं सम्पादित पुस्तकें (उ) छात्र आदि स्थानों में विभाजित किया गया है। कवि प्रणीत साहित्य की विभिन्न कोटियों में से 'परशुरामोदयम्' का महाकाव्य विशिष्ट स्थान है। कवि के एवं कृतित्व पर सामान्य दृष्टि डाले हुए शोधपत्र की आवश्यकता एवं काव्य के अनुसार काव्य विरचित साहित्य का यहाँ पर संक्षेप में विवेचन किया जा रहा है। अन्य अनेक कृतियाँ प्रकाशन में हैं, जिनमें कतिपय इस प्रकार हैं-

1. Linguistic Study of Dharmasutras - यह कविवर द्वारा विद्यावारिधि उपाधि निमित्त प्रस्तुत शोध प्रबन्ध है। इस ग्रन्थ में धर्मसूत्रों पर विभिन्न दृष्टियों से विचार किया गया है। धर्मसूत्र कल्पसूत्रों के अङ्ग हैं। इसलिए इस ग्रन्थ में अधिकतर वैदिक भाषा का प्रयोग है और बहुत से अपाणिनीय प्रयोग भी उपलब्ध हैं। इस शोध ग्रन्थ में सभी अपाणिनीय प्रयोगों, वैदिक प्रयोगों का भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अन्य समकालीन ग्रन्थों के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

2. Essays on Sanskrit Linguistics - इस ग्रन्थ में कवि द्वारा प्रस्तुत किये गये विभिन्न शोध पत्रों का सङ्कलन है। इन शोधपत्रों का संस्कृत भाषा प्रकृति के आधार पर प्रस्तुतीकरण किया गया है। यह शोध-पत्र जहाँ तहाँ विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं और शोध गोष्ठियों में भी पढ़े गये हैं। 1986 ई. वर्ष में संक्रांति प्रकाशन' नई दिल्ली से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ। है।

3. Suryasiddhanta: An Astro-Linguistics Study - सिद्धान्त ज्योतिष के इस ग्रन्थ में कविवर ने स्वतन्त्र रूप से सूर्य सिद्धान्त पर शोध कार्य किया है। यह ग्रन्थ ज्योतिषशास्त्र के ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त पर आधारित है। सूर्य सिद्धान्त भारतीय ज्योतिष शास्त्र का सर्वाधिक प्रामाणिक और सम्माननीय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कविवर ने सूर्यसिद्धान्त ज्योतिष शास्त्र सिद्धान्त आदि को सम्यक् प्रकार से विश्लेषित किया है।

4. वैदिक वाङ्मय का आलोचनात्मक इतिहास - इस ग्रन्थ में कविवर ने प्रमुख रूप से वैदिक वाङ्मय के वेदाङ्ग भाग की स्वीकृति का विस्तृत वर्णन किया है। यहाँ वेदों के छह अङ्ग 'शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष का कवि द्वारा विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक साहित्य के समालोचनात्मक ग्रन्थों में प्रायः वेदाङ्गों का वर्णन संक्षेप में ही प्राप्त होता है, किन्तु कवि ने अपने इस ग्रन्थ में वेदाङ्ग का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इस ग्रन्थ का प्रथम प्रकाशन 1989 ई. वर्ष में हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ द्वारा किया गया है।

5. सर्वाङ्ग ज्योतिष - इस ग्रन्थ में कविवर ने सामान्य रूप से भारतीय ज्योतिष शास्त्र के प्रायः सम्पूर्ण अङ्गों का चित्रण किया है। उक्त ग्रन्थ का प्रकाशन 2008 ई. वर्ष में भारद्वाज इण्टरनेशनल पब्लिशर्ज, नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस ग्रन्थ के पन्द्रह अध्यायों में कविवर ने ज्योतिष शास्त्र के सूक्ष्म तत्त्वों का विवेचन किया है।

6. भागवत विमर्श - कविवर प्रो. भारद्वाज श्रीमद्भागवत महापुराण के प्रसिद्ध व्याख्याकार हैं। वे श्रीमद्भागवत महापुराण के प्रवचन भी करते हैं। इस ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत महापुराण की व्याख्या सप्ताह दिवस अनुसार लिखित है। यह ग्रन्थ दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में कथा सप्ताह दिवस अनुसार विभाजित है और द्वितीय भाग में तात्त्विक विवेचना की गयी है। यथा-

पुराणसंहितामेतामधीत्य प्रवर्तो द्विजः।

प्रोक्तं भगवता यत्तु तत्पदं परमं व्रजेत् ।।[4]

अर्थात् जो मानव श्रीमद्भागवत पुराण पाठ, श्रवण या अनुष्ठान करता है उसके सांसारिक दुःखों का निवारण होता है तथा वह परमपद को प्राप्त करता है। इसमें कवि द्वारा मूल भागवत की किसी भी कथा का त्याग नहीं किया गया, अपितु भागवत पुराण के अनुसार ही दार्शनिक, सामाजिक और भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत किये गये हैं ।

7. अर्पणं (खण्डकाव्यम्) - यह खण्डकाव्य बङ्गलादेश के निर्माण, भारत-पाकिस्तान युद्ध (1971) के परिप्रेक्ष्य लिखा गया है। इस मर्मस्पर्शी खण्ड काव्य में देश के रक्षक सैनिकों की भावनाओं का वर्णन कविवर ने किया है। इस खण्डकाव्य का नायक 'रवि' है। वह नवविवाहिता वधू को छोड़कर भारत देश की रक्षा हेतु युद्ध में जाता है और देश की रक्षा करता हुआ स्मराङ्गण में अपने प्राणों का परित्याग कर देता है। इस काव्य में कवि द्वारा विरोधी पक्ष के सैनिकों की मनोदशा का वर्णन भी उत्तम- रीति से किया गया है। इस खण्डकाव्य में युद्ध की विभीषिका का वर्णन किया गया है। युद्ध के अंत में सभी अधीगत स्थलों की परावृत्त साँध होती है, किन्तु जो परलोक चले गये वे पुनः नहीं लौटते। यह मर्मस्पर्शी सन्देश कवि ने इस खण्डकाव्य में दिया है ।

8. विरहस्तुतिमाल्यम् (गीतिकाव्यम्) - यह गीतिकाव्य कालिदास के 'मेघदूतम्' खण्डकाव्य का अनुकरण करके लिखा गया है। जैसे माला में 108 मनके होते हैं, उसी प्रकार इस खण्डकाव्य में 108 पद्य मन्दाक्रान्ता छन्द में विरचित हैं। इस काव्य का नायक अपनी पत्नी से अलग रहकर अन्य स्थान पर निवास करने के लिए विवश है। काव्य में नायक एवं नायिका सरकार के भिन्न-भिन्न कार्यालयों में पदस्थापित होने के कारण परस्पर एक दूसरे के साथ रहने में असमर्थ हैं। अपने वियोग के कष्ट को मिटाने एवं परस्पर मिलन के लिए पति भगवान् शिव की आराधना करता है। इसी प्रकार पत्नी भी दामपत्य सुख प्राप्ति के लिए माता पार्वती को प्रार्थना करती हैं। इस काव्य में भगवान् शिव की स्तुति इस प्रकार की गई है-

कल्याणीं त्वं धरसि सतं शङ्करख्ये स्वरूपे,
शक्तिं गूढां पतितशरणां नित्यशुद्धा प्रसन्नाम्।
यामाश्रित्यामरजनपतिस्स्वर्गनिष्ठः सदेवं,
त्यक्त्वा शङ्कामसुरजनितां राजते स्वाङ्गनामि।।[5]

9. वयं के स्मः (नाट्यरचना) - यह दो नाटकों का संकलन है। जहाँ प्रथम में निदर्शन और द्वितीय में अङ्गीकरण दिखाया गया है। आधुनिक जीवन में व्याप्त समस्याओं व क्लेशों की अनुभूति के आधार पर कविवर ने ये नाटक लिखे हैं। कवि ने स्वयं नाटकों के सङ्कलन की भूमिका लिखते समय आधुनिक संस्कृत वाङ्मय में वर्तमान परिस्थितिजन्य नाटकों के अभाव पर अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए इस काव्य के प्रकाशन को प्रासङ्गिकता सिद्ध की है।

10. 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' - 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' कवि की प्रौढ़ रचना होने के साथ-साथ संस्कृत की आधुनिक महाकाव्य धारा में नवीनतम महाकाव्य है। 17 सर्गों और 1504 पद्यों में इस महाकाव्य का प्रणयन किया गया है। महाकाव्य में परशुराम के पितामह ऋचीक ऋषि की प्रशंसनीय कथा विस्तारपूर्वक उल्लेखित की गई है। ऋचीक की तपस्या के प्रभाव से भगवान् विष्णु स्वयं उसके पौत्र रूप में प्रकट होते हैं जो कि भृगु कुल के

गौरव को मण्डित करने वाले परशुराम के नाम से विख्यात हुए। उन्होंने ही सहस्रार्जुन का उसकी सेना सहित संहार किया और 21 बार पृथ्वी की क्षत्रियों से विहीन कर दिया। यद्यपि इस महाकाव्य में परशुराम के दादा ऋचीक का अधिक वर्णन है तथापि कवि की परशुराम के प्रति गहरी आस्था और निष्ठा होने के कारण महाकाव्य का नाम परशुराम के नाम पर परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' रखा गया है।

11. मयूरकलास्यम् (काव्यसङ्कलन) - इस ग्रन्थ में कवि द्वारा हरियाणा के उन कवियों की कृतियों का सङ्कलन कर प्रकाशित किया गया है, जिन्होंने अपनी कृतियाँ प्रकाशित नहीं करवाई। यह ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है - (क) पद्य भाग (ख) गद्य भाग (ग) परिचय भाग।

कविवर इस ग्रन्थ के सम्पादकीय में लिखते हैं- 'संस्कृत भाषा की सेवा के उद्देश्य से दो वर्ष पूर्व रोहतक नगर में वेदव्याससंस्कृतपरिषद् की स्थापना की गई थी। इस परिषद् का मूल उद्देश्य संस्कृत साहित्य की सेवा संवर्द्धन व प्रचार-प्रसार था। इस उद्देश्य की पूर्ति करते हुए प्रथम प्रयास के रूप में मयूरकलास्यम्' इस नाम के ग्रन्थ में हरियाणा प्रान्तवासी कवियों के काव्य सङ्कलन प्रकाशित किये गये हैं।'

12. परशुरामविक्रमम् (महाकाव्य) - कविवर का द्वितीय महाकाव्य 'परशुरामविक्रमम्' है। इस महाकाव्य में परशुराम के जीवन चरित को प्रकाशित किया गया है। यह महाकाव्य 21 सगों में विभक्त है। काव्य की सर्ग संख्या परशुराम द्वारा दुष्ट शासकों को 21 बार युद्ध में पराजित करने पर ही रखी गई है। 13. विविध इन सबके इत्तर कवि का हिन्दी भाषा पर भी सुदृढ़ अधिकार है और कविवर 'कल्प' ने हिन्दी भाषा को भी विभिन्न रचनाओं को लेखनीबद्ध कर प्रकाशित किया है। प्रसंगानुसार उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ अपेक्षित है।

(क) कथा संग्रह (2) - 1. बस आज की रात 2. कैदी नम्बर ग्यारह

(ख) उपन्यास (2) - 1. हरिद्वार की देवी 2. सागरिका

(ग) आकाशवाणी नाटकों का सङ्कलन भी कविवर द्वारा प्रकाशित है, जो कि आकाशवाणी रोहतक पर प्रसारित हुए हैं।

1. उजाले की ओर (चार रेडियो नाटक)

(घ) कवि द्वारा संस्कृतभाषा पाठ्यक्रम से सम्बन्धित दो पाठ्यपुस्तकों का प्रणयन भी किया गया है।

1. संस्कृत व्याकरण 2. संस्कृत सुषमा

महाकवि प्रो. सुधीकान्त भारद्वाज 'कल्प' के निर्देशन में 22 शोधार्थियों को विद्यावारिधि (पीएच.डी.) और 50 से अधिक विद्यार्थियों को एम. फिल. की उपाधियाँ प्रदान की गई हैं। कविवर ने छात्रों का वेद, व्याकरण, साहित्य, दर्शन, पुराण, ज्योतिष आदि विभिन्न विषयों में मार्गदर्शन किया है।

निष्कर्ष - भारतीय धर्म एवं संस्कृति के अनन्य उपासक कविवर प्रो. सुधीकान्त भारद्वाज ने अपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में सनातन संस्कृति एवं वर्तमान भौतिकवाद की संस्कृति में परस्पर सामञ्जस्य रखते हुए नए आदर्शों की स्थापना करने का प्रयास किया। संस्कृत भाषा के प्रति समर्पित विद्वान डॉ. भारद्वाज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से उनके विराट् व्यक्तित्व को आधुनिक युग के शोधार्थियों एवं संस्कृत साधकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

REFERENCES

1. 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' - 1/3

2. 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्', समर्पणम् पृ.-01

3. 'परशुरामोदयम् महाकाव्यम्' - 1/4

4. भागवत विमर्श - पृ. 304

5. विरहस्तुतिमाल्यम् - 13